

के उत्साह में, जीने की इच्छा तो थी अवश्य, पर हमें (जो) थी "भाषा" की। यह बहुमुखी माध्यम जिसके बिना सोचना, बोलना, लिखना असम्भव है। भाषा से इसी समय एक कवि दमोदर आये। वे थे हमारे शिक्षक गौरी शंकर जी लहरी। इन्होंने बड़े आत्मीय ढंग से हमें हिन्दी भाषा पढ़ाई। कभी रामायण के दोहे, कभी कविता या साहित्य और कभी अपनी कविताएँ भी। शाला के बाद कला और संगीत पर बात-चीत होती थी। उसी समय इन्हीं के प्रोत्साहन से हमने पहली हस्तलिखित पत्रिका बनाई जिसका नाम था "पुष्पांजली"। हमारे मित्र जानकी प्रसाद, परुषोत्तम लाल और मेरे बड़े भाई यशुदत्त राजा इसके संपादक थे। कविता तो मेरे घस की बात न थी, पर मैंने ही इस पत्रिका का भूख पृष्ठ बनाया था।

दमोदर के बाद कला शिक्षा के तीन वर्ष नागपुर में बीते। इतना बड़ा शहर कभी न देखा था, पर यहाँ भी कला गुरु श्री बापूराव आढवले का स्नेह मिला। धन्तोली में स्थित यह कला केन्द्र एक आश्रम के समान था जहाँ सारे प्रदेश से विद्यार्थी आते थे। और उसी समय नये नये शिक्षक-चित्रकार बुलाए गये। मुझे शाला में ही वहीं कुटुम्ब में भी विशेष स्थान मिला। दिन में कला अध्ययन, और कभी कभी शाम को शुद्ध भारतीय संगीत। समय अनिश्चित और तनाव का था। असेफ में महायुद्ध, देश में आन्दोलन। आर्थिक कठिनाइयों के बीच अपनी पढ़ाई-लिखाई बड़त कठिनाई लगता था, पर इन तीन वर्षों में गुरुवर आढवले ने जो मुझे योगदान और सहायता की, उसे मैं कभी न भूलूँगा।

बम्बई और पेरिस के संघर्ष के बाद, आज भी मैं, इन स्थितियों को आभासहित याद करता हूँ। मैं कहता हूँ। कभी कभी कहता हूँ, "विद्याता, आपने सब कुछ सोच रखा था।" कभी कहता हूँ "केवल एकानता और कठोर श्रम में ही जीवक है।" आलस नहीं। वस यही जानता हूँ कि मुझे शक्तियाँ मिलीं इसी प्रदेश में, देश के बीचस्थित, "मध्य प्रदेश", देह में हृदय के समान।

सैयद रेयान (शा)  
पेरिस - १९८१